LOYOLA SCHOOL, BHUBANESWAR

Half Yearly Evaluation, September 2025

Class – IX	**Subject:2nd Lang(Hindi)**	**F.M.80**	**Time: 3hrs**

खंड 'क'

प्र.1. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर लगभग 250 शब्दों में संक्षिप्त प्रस्ताव लिखिए। [15]

(क) "किसी भी राष्ट्र को सुदृढ़ बनाने के लिए यह आवश्यक है कि उसके नागरिक स्वस्थ एवं शक्तिशाली हों।" इस सन्दर्भ में अपने विचार लिखिए।

(ख) आपको एक माह के लिए अपने विद्यालय के खेल-कूद से सम्बन्धित कार्यक्रमों का भार सौंपा जाता है। आप खेल-कूद की सुविधाओं में सुधार हेतु क्या-क्या उपाय करेंगे? रचनात्मक सुझाव दीजिए।

(ग) "संघे शक्ति कलियुगे" अर्थात् एकता में हो बल है, अनेकता से अवनति- इस कथन को स्पष्ट करते हुए एक कहानी लिखिए।

(घ) 'परिवार बालक की प्रथम पाठशाला है।' प्रस्तुत कथन को ध्यान में रखते हुए बालक के लिए परिवार की महत्ता का वर्णन कीजिए।

(ङ) नीचे दिए चित्र को ध्यानपूर्वक देखिए और मन में उभरते विचार कहानी बद्ध कीजिए।

प्र.2. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में पत्र लिखिए। [7]

(क) भारतीय संस्कृति और सभ्यता विश्व में अपना अद्वितीय स्थान रखती है। ऐसा आपको तब ज्ञात हुआ जब आप विदेश गए। इस विषय से सम्बन्धित जानकारी देते हुए तथा अपने अनुभव बताते हुए अपनी बड़ी बहन को पत्र लिखिए।

अथवा

(ख) आपके आसपास के क्षेत्र में लगातार बिना अनुमति के वृक्षों का कटान हो रहा है। इसके नियन्त्रण के लिए सम्बन्धित अधिकारी को पत्र लिखिए।

प्र.3. नीचे लिखे गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिए। उत्तर यथासंभव आपके अपने शब्दों में होने चाहिए।

आज जिस गति से मान्यताएँ बदल रही हैं, वह वास्तव में बड़ा ही गम्भीरतापूर्वक विचारणीय प्रश्न है। संसार के समस्त सुख संसाधन मानव जीवन को खुशहाल बनाने के लिए ही जुटाए जाते हैं, किंतु यदि मानव उन्हें जुटाने में मानवता ही खो बैठे तो वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी ही नहीं और जब हम मनुष्यत्व ही खो बैठे तो फिर हमारे पास बचा ही क्या ?

सचमुच तीव्रतर गति से दौड़ती-भागती ज़िन्दगी एक ओर तो बड़ी ही सम्पन्न प्रतीत होती है किन्तु हम जान भी नहीं पा रहे हैं, दूसरी ओर अधिक तीव्र गति से यह सम्पन्नता हमें विपन्नता के उस गर्त में गिराती जा रही है जहाँ से निकलना कदाचित असंभव ही होगा। आज अधिकांशतः मनुष्यों के लिए दया, प्रेम, स्नेह, क्षमा, मान-सम्मान, त्याग, तपस्या आदि शब्दकोश तक ही सीमित रह गए हैं। हममें से अधिकांश अपने निजी क्षुद्र स्वार्थ के लिए इस महान मानव जीवन की इन अवधारणाओं को बड़े ही सहज रूप में ताक पर उठा कर रख देते हैं। पग-पग पर उचित अनुचित का ज्ञान कराने वाली 'गार्ड' स्वरूप हमारी अन्तरात्मा भी आज आधुनिक बन गई है। वह भी प्रायः घोड़े बेचकर सो जाया करती है और मानव रूपी इस प्राणी को बेलगाम घोड़े की भाँति स्वच्छन्द छोड़ देती है।

किन्तु समय परिवर्तनशील है। जब 'त्रेतायुग, जिसमें सिंह और मृग एक घाट पर पानी पीते थे, जब मानव में मानवता रग-रग में समाई थी, परिवर्तित हुआ, तो आज कलियुग, जिसमें संतान माता-पिता का सम्मान करने के लिए भी सोचती है, शिष्य गुरु के प्रति श्रद्धावान नहीं, भाई-भाई का बैरी बन बैठता है, मित्रता की परिभाषा बदल गई है, जैसा समय भी नहीं रहेगा।
दीपक की लौ बुझते समय अधिक तेज हो जाती है। पुनः जली बत्ती हटा कर काला तेल निकाल कर, दीपक को माँज-धो कर चमका कर नई श्वेत रुई की बती डाल दी जाती है, जो जलते ही वातावरण को उज्ज्वल, निर्मल श्वेत प्रकाश से जगमगा देती है।

समय बदलेगा, युग बदलेगा, बदलते युग तक भौतिकवाद की आँधी में स्वयं को बचाकर रखना है। बुद्धि और विवेक से भौतिकवाद की आँधी में काली आँधी के थपेड़ों को सहन कर सुखद, शान्त वातावरण में श्वास लेने की प्रतीक्षा करनी है। इसी में बुद्धिमानी है, सामाजिक न्याय है, जनहित है, राष्ट्रहित है और यहाँ तक कि लोकहित है।

1. मनुष्य मनुष्य कहलाने का अधिकारी कब नहीं रहता व क्यों? [2×5=10]
2. दूर से सम्पन्न व खुशहाल सा प्रतीत होने वाला जीवन क्या वास्तव में खुशहाल होता है? यदि नहीं तो क्यों?
3. मनुष्य के शरीर में रहने वाला 'गार्ड' किसे बताया गया है? क्या वह भी आज आधुनिक बन गया है? इस कथन में निहित भाव को स्पष्ट कीजिए।
4. कुल कितने युग हैं? 'त्रेता युग' व 'कलियुग' का तुलनात्मक विवेचन कीजिए।
5. दीपक की लौ बुझते समय कैसी हो जाती है ? लेखक ने इस 'लौ' के माध्यम से क्या कहना चाहा है ?

प्र०4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार लिखिए – [8]

i) 'कमल' का पर्यायवाची शब्द है –

(क) अब्ज, वारिज (ख) राजीव, इष्ट (ग) जलज, अंशु (घ) अंबुज, तोय

ii) 'ठंडा' की भाववाचक संज्ञा है –

(क) ठंडकता (ख) ठंडक (ग) ठंडी (घ) ठंडाई

iii) 'आविर्भाव' का विलोम शब्द है –

(क) शिरोभाव (ख) विरोभाव (ग) धिरोभाव (घ) तिरोभाव

iv) 'जो इंद्रियों के अनुभव से बाहर है उसे समझना कठिन है' के लिए एक शब्द है –

(क) जो अकिंचन है उसे समझना कठिन है। (ख) जो अकल्पनीय है उसे समझना कठिन है।

(ग) जो अगोचर है उसे समझना कठिन है। (घ) जो अपरिमेय है उसे समझना कठिन है।

v) 'ओद्यौगिक' का शुद्ध रूप होगा –

(क) ओद्यौगिक (ख) औद्योगिक (ग) औद्यौगिक (घ) उद्योगिक

vi) "आजकल नौकरी प्राप्त करना कोई ..... नहीं है।"

(रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए उचित मुहावरे का प्रयोग करें।)

(क) नानी का घर (ख) बच्चों का खेल (ग) मैदान मारना (घ) खाला जी का घर

vii) 'मैंने उसका धन्यवाद किया।' का शुद्ध वाक्य होगा –

(क) मैंने उसे धन्यवाद दिया। (ख) मैंने उसे धन्यवाद किया।

(ग) मैं उसका धन्यवाद करता हूँ। (घ) मैं उसे धन्यवाद देता है।

viii) आपका लेख बहुत सुंदर है।

(वाक्य में 'आप' शब्द से वाक्य आरंभ कीजिए।)

(a) आप लेख बहुत सुंदर लिखते हैं। (b) आप बहुत अच्छे लेखक हैं।

(c) आप लिखते हैं बहुत सुंदर। (d) आप बहुत सुंदर लिखते हैं।

खंड 'ख'

Attempt four questions from this Section.

You must answer at least one question from each of the two books you have studied and any two other questions.

(साहित्य सागर-संक्षिप्त कहानियाँ)

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए।

5."महत्त्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं उस भावना का है वरना तो देश-भक्ति भी आजकल मज़ाक की चीज होती जा रही है।"

(क) प्रस्तुत कथन किसका है? उसने यह विचार किस अवसर पर व्यक्त किया है? [2]

(ख) वक्ता ने पानवाले से क्या जानकारी हासिल की और क्यों? [2]

(ग) पानवाले का संक्षिप्त परिचय दीजिए तथा शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए। [3]

(घ) मनुष्य का चरित्र उसके हाव-भाव तथा उसके सद्‌गुणों पर निर्भर करता है न कि उसके बाह्य स्वरूप पर।' स्पष्ट कीजिए। [3]

6 वर्षा के अनंतर एक-दो दिन में ही पृथ्वी के ऊपर का पानी तो अगोचर हो जाता है, परंतु भीतर ही भीतर उसकी आर्द्रता जैसे बहुत दिन तक बनी रहती है, वैसे ही उसके अन्तःस्तल में वह शोक जाकर बस गया था।

(क) किस प्रसंग में उपर्युक्त वाक्य का उल्लेख हुआ है? स्पष्ट करो। [2]

(ख) 'ऊपर का पानी' तथा 'भीतर की आर्द्रता' के द्वारा लेखक का किस ओर संकेत है? [2]

(ग) आप किस प्रकार जानेंगे कि पृथ्वी के अंदर की आर्द्रता बहुत समय तक स्थाई रहती है?उदाहरण सहित समझाइए। [3]
अनंतर, अगोचर, आर्द्रता और अंत: स्तल शब्दों के अर्थ लिखिए।

(घ) 'कहानी में वक्ता का अपने पुत्र के प्रति उदासीनता का व्यवहार अनुचित था।' इस कथन पर अपने विचार प्रकट कीजिए। वस्तुतः उनका व्यवहार किस प्रकार का होना चाहिए था? [3]

(7) सेठ ने आदयोपांत सारी कथा सुनाई। सुनकर सेठानी की सारी वेदना जाने कहाँ विलीन हो गई, हृदय उल्लसित हो उठा।

(क) आद्योपांत तथा उल्लसित शब्दों के अर्थ लिखिए। सेठ ने कौन-सी कथा सेठानी को सुनाई? [2]

(ख) उपर्युक्त अवतरण के आधार पर सेठानी के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए। [2]

(ग) इस समय सेठानी के प्रसन्न होने का क्या कारण था? उसने अपने पति के विषय में क्या सोचा तथा क्या किया? [3]

(घ) सेठ के सत्कर्म को देख ईश्वर ने उनका किस प्रकार कल्याण किया? शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए [3]

एकांकी संचय

निम्नलिखित अवतरणों को पदिए और उसके नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर हिंदी में लिखिए।

8."मेरी बेटी पहला सावन यहाँ बिताएगी, तुम्हारी बहन के सपने पूरे नहीं होंगे और उसके सपनों के खून का दाग तुम्हारे हाथों और तुम्हारी माँ के आँचल पर होगा।"

(क) प्रस्तुत कथन के वक्ता और श्रोता कौन है? वक्ता की मानसिकता बताइए। [2]

(ख) यहाँ बहन के किस सपने की बात हो रही है? क्या यह वास्तव में सपना होता है? [2]

(ग) वक्ता ने बहन के सपने पूरे न होने की क्या वहीं इसके जिम्मेदार है? आपके दृष्टिकोण से क्या बक्ता का व्यवहार उचित था? तर्क सहित उत्तर दीजिए। [3]

(घ) इस एकांकी में समाज की किस ज्वलंत समस्या की ओर इशारा किया गया है? इस समस्या से समाज में क्या स्थिति उत्पन्न हो रही है? एकांकी का उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए। [3]

9.. तू एक बार मुझे उसके पास ले चल। वह निर्मम है, पर मैं माँ हूँ। मुझे निर्मम नहीं होना चाहिए। मैं उसके पास चलूँगी ।

(क) इन शब्दों में किस नारी की मनोव्यथा व्यक्त हुई है? उसकी मनोदशा का क्या कारण है? समझाकर लिखिए। [2]

(ख) 'तू' का संबोधन किसने किसके लिए किया है? वह उससे क्या कहना चाहती है और क्यों? [2]

(ग) क्या वक्ता निर्मम थी? उसकी निर्ममता का क्या कारण था? समझाकर लिखिए । [3]

(घ) 'संस्कार और भावना' नाटक की रचना किस उद्देश्य से की गई है,? क्या नाटककार अपने उद्देश्य में सफल रहा है? [3]

10) हाँ, उसी ने कहा था। मैंने उसे बहुत समझाया, अपने प्रेम की दुहाई दी, पर वह सदा यही कहता रहा: 'माँ, सन्तान का पालन माँ-बाप का नैतिक कर्त्तव्य है। वे किसी पर कोई एहसान नहीं करते, केवल राष्ट्र का ऋण चुकाते हैं।

(क) 'उसी ने कहा था।' इस वाक्य को किसने, किसके सम्बन्ध में कहा ? उसका संक्षिप्त परिचय दीजिए। [2]

(ख) माँ ने किसे, क्या समझाया था ? संक्षेप में लिखिए। [2]

(ग) अन्तर्जातीय विवाह का देश की एकता और अखण्डता में क्या महत्व है ? संक्षेप में लिखिए। [3]

(घ) 'राष्ट्र का ऋण' का अर्थ स्पष्ट कीजिए। बच्चों के पालन-पोषण को 'राष्ट्र का ऋण' क्यों कहा गया है ? समझाकर लिखिए। [3]

**********ALL THE BEST**********